मंगलाचरणम्

पंच-परमेट्ठि-वंदण

(धवलान्तर्गतम्)

सिध्दा दद्धङ्ठमला विसुद्ध-बुद्धी य लद्ध-सव्वत्था ।
तिहुवण-सिर-सेहरया पसियंतु भंडारया सव्वे ॥१॥

तिहुवण-भवणप्पसरिय-पच्चक्खवबोह-किरण-परिवेढो ।
उइओ वि अणत्थवणो अरहंत -दिवायरो जयऊ ॥२॥

ति-रयण-खग्ग-णिहाएणुत्तारिय-मोह-सेण्ण-सिर-णिवहो ।
आइरिय-राउ पसियउ परिवालिय-भविय-जिय-लोओ ॥३॥

अण्णाणयंधयारे अणोरपारे भमंत-भवियाणं ।
उज्जोओ जेहि कओ पसियंतु सया उवज्झाया ॥ ४ ॥

संधारिय-सीलहरा उत्तारिय-चिरपमाद-दुस्सीलभरा ।
साहू जयंतु सव्वे सिव-सुह-पह-संठिया हु णिग्गलिय-भया ॥५॥

जयउ धरसेण-णाहो जेण महाकम्म-पयडि...पाहुड-सेलो
बुद्धिसिरेणुद्धरिओ समप्पिओ पुप्फयंतस्स ॥ ६ ॥